www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

असंतोष के कारण एवं निवारण

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

-पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

असंतोष के कारण एवं निवारण

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लेखक

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा—२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो० : ०९९२७०८६२८९, ०९९२७०८६२८७

फैक्स : २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१४

मूल्य : ६.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि

मथुरा (उ० प्र०)

लेखक

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पुनरावृत्ति सन् २०१४

मुद्रक

युग निर्माण योजना प्रेस

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असंतोष के कारण एवं निवारण

प्रसन्नता की उपलब्धि सद्विचारों से

जीवन में बालक से लेकर बूढ़े तक सभी प्रसन्नता चाहते हैं और उसे पाने का प्रयत्न करते रहते हैं। ऐसा करना भी चाहिए। क्योंकि एक स्थायी प्रसन्नता जीवन का चरम लक्ष्य भी है। यदि मनुष्य जीवन में प्रसन्नता का नितांत अभाव हो जाए तो उसका कुछ समय चल सकना भी असंभव समझना चाहिए।

यह बात सत्य है कि मानव जीवन में अनुपात दु:ख-क्लेश का ही अधिक देखने में आता है। तब भी लोग शौक से जी रहे हैं। इसका कारण यही है कि बीच-बीच में उन्हें प्रसन्नता भी प्राप्त होती रहती है और उसके लिए उन्हें नित्य नई आशा भी बनी रहती है। प्रसन्नता जीवन के लिए संजीवनी तत्त्व है, मनुष्य को उसे प्राप्त करना चाहिए। प्रसन्नावस्था में ही मनुष्य अपना तथा समाज का कुछ भला कर सकता है, विषण्णावस्था में नहीं।

प्रसन्नता वांछनीय भी है और लोग उसे पाने के लिए निरंतर प्रयत्न भी करते रहते हैं, किंतु फिर भी कोई उसे अपेक्षित अर्थ में पाता दिखाई नहीं देता। क्या धनवान, क्या बालक और वृद्ध किसी से भी पूछ देखिए—क्या आप जीवन में पूर्ण संतुष्ट और प्रसन्न हैं? उत्तर अधिकतर नकारात्मक ही मिलेगा। उसका पूरक दूसरा प्रश्न भी करके देखिए—तो क्या आप उसके लिए प्रयत्न नहीं करते? नब्बे प्रतिशत से अधिक उत्तर यही मिलेगा कि, "प्रयत्न तो बहुत करते है, पर प्रसन्नता मिल ही नहीं पाती।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निस्संदेह मनुष्य की यह असफलता आश्चर्य ही नहीं, दुःख का विषय है।

कितने खेद का विषय है कि आदमी किसी एक विषय अथवा वस्तु के लिए प्रयत्न करे और उसको प्राप्त न कर सके। ऐसा भी नहीं कि कोई उसे प्राप्त करने में कम श्रम करता हो अथवा प्रयत्नों में कोताही रखता हो। मनुष्य अनुक्षण एकमात्र संपूर्ण प्रसन्नता प्राप्त करने में ही तत्पर एवं व्यस्त रहता है। वह सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते जो कुछ भी अच्छा-बुरा करता है, सब प्रसन्नता प्राप्त करने के मंतव्य से। किंतु खेद है कि वह उसे उचित रूप से प्राप्त नहीं कर पाता।

इस स्थिति को देखते हुए तो यही समझ में आता है कि या तो मनुष्य प्रसन्नता के वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचानता अथवा वह अपनी वांछित वस्तु को पाने के लिए जिस दिशा में प्रयत्न करता है, वह ही गलत है। इस समस्या पर गहराई से विचार करने की आवश्यकता है।

लोगों में अधिकतर एक सामान्य धारणा यह रहा करती है कि यदि उनके पास अधिक पैसा हो, साधन-सुविधाएँ हों तो वे प्रसन्न रह सकते हैं। ऐसी धारणाओं वाले लोग पैसे और साधन-सुविधाओं के लिए रोते-रिरियाते रहने की बजाय, एक बार दृष्टि उठाकर अन्य लोगों की ओर क्यों नहीं देखते कि प्रचुरता से परिपूर्ण होने पर भी क्या वे सुखी है, प्रसन्न और संतुष्ट हैं? यदि धन-दौलत तथा साधन-सुविधाएँ ही प्रसन्नता के हेतु होती, तो संसार का हर धनवान अधिक से अधिक सुखी और संतुष्ट होता, किंतु ऐसा कहाँ है? इससे स्पष्ट सिद्ध है कि वैभव और विभूति वास्तविक प्रसन्नता का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कारण नहीं है। प्रसन्नता प्राप्ति का हेतु मानकर इन भौतिक विभूतियों के लिए रोते-मरते रहना बुद्धिमानी नहीं है।

बल, बुद्धि और विद्या को भी प्रसन्नता का हेतु मानने की एक सभ्य प्रथा है। किंतु यह ऐश्वर्य भी वास्तविक प्रसन्नता का वाहक नहीं है। यदि ऐसा होता तो हर शिक्षित प्रसन्न दिखाई देता और हर अशिक्षित अप्रसन्न। ऐसा भी देखने में नहीं आता। जिस प्रकार अनेक धनवान अप्रसन्न और निर्धन प्रसन्न देखे जा सकते हैं, उसी प्रकार अनेक विद्वान क्षुब्ध तथा बेपढ़े-लिखे लोग प्रसन्न मिल सकते हैं। बड़े-बड़े बलवान आहें भरते और साधारण सामर्थ्य वाले व्यक्ति हँसी-खुशी से जीवन बिताते मिल सकते हैं।

इस प्रकार विचार करने से पता चलता है कि वास्तविक प्रसन्नता कोई ऐसी वस्तु नहीं, जिसको किसी शक्ति अथवा साधन के बल पर प्राप्त किया जा सके। साधनों की झोली फैलाकर प्रसन्नता की तलाश में दौड़ने वाले कभी भी प्रसन्नता प्राप्त नहीं कर सकते और वास्तविक बात तो यह है कि जो जितना अधिक प्रसन्नता के पीछे दौड़ते हैं, वे उतने ही अधिक निराश होते हैं। उनका यह निरर्थक श्रम उस अबोध हिरण की तरह ही शोचनीय होता है जो पानी के भ्रम में मरु-मरीचिका के पीछे दौड़ते हैं, अथवा उस बालक की तरह कौतुकपूर्ण है जो आगे पड़ी हुई अपनी छाया को पकड़ने के लिए दौड़ता है। प्रसन्नता कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसका पीछा करने की जरूरत है। वह तो अवसर आने पर स्वयं ही आकर मनोमंदिर में हँसने लगती है। उसके आने का एक अवसर तो वही होता है जब हम उसको पाने के लिए कम से कम लालायित, व्यग्र और चिंतित होते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रसन्नताप्राप्ति का मुख्य रहस्य यह है कि मनुष्य अपने लिए सुख की कामना को छोड़कर अपना जीवन दूसरों की प्रसन्नता में योजित करे। दूसरों को प्रसन्न करने के प्रयत्न करने में जो कष्ट भी प्राप्त होता है, वह भी प्रसन्नता ही देता है। छोटा-मोटा कष्ट तो दूर, देशभक्त तथा अनेक परोपकारियों ने अपने प्राण देने पर भी अनिर्वचनीय प्रसन्नता प्राप्त की है। इतिहास ऐसे बलिदानों से भरा पड़ा है कि जिस समय उनको मृत्युवेदी पर प्राण हरण के लिए लाया गया उस समय उनके मुख पर जो आह्लाद, जो तेज, जो मुस्कान और जो प्रसन्नता देखी गई, वह काल के अनंत पृष्ठ पर स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गई।

एक साधारण से साधारण व्यक्ति भी अपने जीवन की किसी न किसी ऐसी घटना का स्मरण करके समझ सकता है कि जब उसने कोई परोपकार का काम किया था, तब इसके हृदय में प्रसन्नता की कितनी गहरी अनुभूति हुई थी। जिस दिन यह सोचने के बजाय कि आज हम अपने लिए अधिक से अधिक प्रसन्नता संचय करेंगे, यदि यह सोचकर दिन का काम आरंभ किया जाए कि आज हम दूसरों को अधिक से अधिक प्रसन्न करने का प्रयत्न करेंगे तो वह दिन आपके लिए बहुत अधिक प्रसन्नता का दिन होगा।

साधारण मनोरंजन, कार्यों तथा व्यवहारों में इस रहस्य को आएदिन देखा जा सकता है कि जो काम दूसरों को प्रसन्न करने वाले होते हैं अथवा जिन कामों से हम दूसरों को प्रसन्न कर पाते है वे ही काम हमें अधिक से अधिक प्रसन्न किया करते हैं। एक खिलाड़ी गेंद खेलता है और विपक्ष पर एक गोल कर देता है, तो उसे अपनी सफलता पर प्रसन्नता होती है, किंतु तभी जब उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साथी भी प्रसन्न होते हैं। यदि किसी कारण से उसकी यह सफलता दर्शकों अथवा साथियों को प्रसन्न न कर पाए, तो उसे स्वयं भी प्रसन्नता न होगी। एक शिल्पी भवन अथवा मंदिर बनाता है। यद्यपि वह उसका नहीं होता तथापि वह इसलिए प्रसन्न होता है कि उसका वह काम दूसरों को प्रसन्न कर सका है। इसी प्रकार कोई चित्रकार, कलाकार अथवा कवि, कोई रचना करता है तो उसे प्रसन्नता होती है, उसे अपनी कृति अच्छी लगती है। किंतु उसकी प्रसन्नता में वास्तविकता तभी आती है, जब दूसरे भी प्रसन्न होते हैं। संयोगवश यदि उसका सृजन अन्य किसी की प्रसन्नता का संपादन न कर सके, तो अपनी होते हुए भी कला से कोई रुचि न रहेगी, वह उसे बेकार समझेगा और उसकी प्रसन्नता जाती रहेगी।

वास्तविक प्रसन्नता का मूल रहस्य दूसरों की प्रसन्नता में निहित है। जो परोपकारी व्यक्ति दूसरों के सुख के लिए जीते है, उनके कार्य औरों की सेवा रूप होते हैं। वे अपने जीवन में साधन शून्य रहने पर भी प्रसन्न, संतुष्ट एवं सुखी रहते हैं। जिसको जीवन में वास्तविक प्रसन्नता की जिज्ञासा हो, वह अपने जीवन को यज्ञमय बनाए, नित्य-निरंतर दूसरों का हित साधन करे, जिससे वह अपनी वांछित वस्तु प्रसन्नता को नित्य-निरंतर पाता रहे।

प्रसन्नता की प्राप्ति का मार्ग

हृदय की आंतरिक पवित्रता, शुद्धि का बाह्य परिणाम है, बाह्य चिह्न है। जब चित्त शुद्ध होकर सत्वगुण संपन्न हो जाता है तभी प्रसन्नता की सहज वृत्ति जाग्रत हो जाती है। जब इस तरह के सत्वगुण संपन्न महापुरुष, जिनका अंतर निर्मल, पवित्र और स्वच्छ हो जाता है, जिन्होंने अपने अंतर का समाधान कर लिया है, हँसते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं तो वातावरण में हँसी के स्रोत फूट पड़ते हैं। उनके चारों ओर प्रसन्नता साकार हो उठती है। दुखी, क्लेशयुक्त व्यक्ति भी उस प्रसन्नता के वातावरण में उस समय के लिए अपने दुःख-क्लेशों को भूल जाता है।

महापुरुषों के सान्निध्य में रहने वाले इस तथ्य को जानते हैं। सचमुच उनके निर्मल हृदय से प्रसन्नता की सुरसरि प्रवाहित होती रहती है जैसे पावन हिमालय से गंगा। यह तो रही उन महान आत्माओं की बात जिनके जीवन में प्रसन्नता एक रूप हो गई है। जनसाधारण, जो प्रसन्नता के अभाव में जीवन में क्लेश, दुःख, परेशानी अनुभव कर रहे हैं, उनकी प्रसन्नता को जीवन में उतारने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखकर अपने अंतर-बाह्य जीवन में निर्मलता, स्वच्छता, माधुर्य, आंतरिक समाधान आदि के लिए सतत प्रयत्न करना आवश्यक है।

मनुष्य एकदूसरे पर अवलंबित है। समाज के विशाल भवन में मनुष्यों का गठन उसी तरह है जैसे किसी माला के विभिन्न मनकों का। किसी भवन निर्माण में ईंटों को एकदूसरे से मिलाकर एक निश्चित स्तर से रखना पड़ता है, उस भवन के निर्माण में प्रत्येक ईंट का अपना विशेष स्थान है। इतना ही नहीं, नीव में निम्न स्तर पर लगी हुई ईंट का और भी अधिक महत्त्व है क्योंकि उसके ऊपर समस्त भवन का बोझा उठा हुआ है। ठीक इसी तरह मानव मात्र एकदूसरे से संबंधित हैं। सेंटपाल के शब्दों में—"हम एक-दूसरे के साथी हैं, परस्पर अन्योन्याश्रयी हैं। अतः किसी का भी भले ही निम्न स्तर क्यों न हो, हमें घृणा की दृष्टि से देखने का अधिकार नहीं है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मनुष्यों के इस निकट संबंध में एक ही बात निश्चित है और वह है सबसे प्रेम करना, सबके अस्तित्व को अपनी तरह ही मानकर उसका पूरा-पूरा आदर करना। पड़ोसी से लेकर सबको प्रेम करना आवश्यक है। इससे आंतरिक क्षेत्र से घृणा, अनुदारता, स्वार्थपरता आदि दोष दूर होंगे और प्रसन्नता का प्रकाश प्रकट होने लगेगा।

प्रत्येक व्यक्ति मूल रूप से अच्छा है बुरा नहीं। अत: किसी के गुण-दोषों से बहुत अधिक प्रभावित नहीं होना चाहिए। गुण और दोषों का संबंध उसी तरह है जैसे दीपक के प्रकाश में उसकी स्वयं की छाया। और यह निश्चित है कि दीपक की छाया के अभाव में प्रकाश का भी अस्तित्व नहीं। दृढ़ निश्चयी व्यक्ति में कुछ न कुछ हठीलापन होना संभव है। कर्त्तव्य के साथ थोड़ा-बहुत अहंकार होना स्वाभाविक है। इस तरह के दोष छाया-दोष कहे जाते है, जिनका अस्तित्व भी स्वीकार करना आवश्यक है। गुण-दोष विरहित मनुष्य मिलना दुर्लभ है। अव्यक्त के प्रकाश के लिए छाया-दोष, चेतना की अभिव्यक्ति के लिए जड़ तत्त्व का परिधान स्वाभाविक है। अत: गुण-दोषों का ध्यान न रखकर, सभी का आदर करना प्रसन्नता की अभिवृद्धि के लिए आवश्यक है।

दूसरे से अनादर, अविश्वास, मतभेद, विचारभेद रखना प्रसन्नता की जगह राग, द्वेष, क्लेश, अनादर और अन्य बुराई के बीज बोना है। संसार में आज की गुटबंदी, दलबंदी, भिन्न-भिन्न वाद, प्रांतीयता और विभिन्न एकांगी निर्णय आदि जिनसे लोगों में परस्पर विनाश की तैयारी होने लगती है और हिंसा की भावना बढ़ती है; वे सब प्रसन्नता को दूर करके मानवता को नष्ट-भ्रष्ट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने वाले हैं। यह सब एकदूसरे के लिए प्रेम, आदर के अभाव के कारण ही होता है।

विभिन्न विचारों, दृष्टिकोणों, स्वभावों के कारण भेद हो सकते हैं और यह उसी तरह स्वाभाविक है जैसे संसार और इसके पदार्थों की विभिन्नता, विचित्रता। किंतु इनके साथ द्वेष, कटुता के भाव न हों वरन प्रेम, एकदूसरे को आदर की भावनाएँ हों, जिससे विचार का, बातचीत का, हृदयों की एकता का रास्ता खुला रहे और मनुष्य इन सबसे सत्य को पा सके। प्रसन्नता के लिए परस्पर बुनियादी प्रेम तथा आदर भावनाएँ होना आवश्यक है।

स्नेह में भी आसक्ति होती है। किंतु निस्स्वार्थ प्रेम और आदर अंतस्तल को शुद्ध कर उसे बल प्रदान करता है, समर्थ बनाता है।

सृष्टि का प्रत्येक अणु-परमाणु अपने स्थान पर पूर्ण है। 'जो ब्रह्मांड में वही पिंड में' ऐसा श्रुतियाँ एक स्वर से कहती हैं। पूर्णता का भाव प्रत्येक चेतन में है। एक पिता भोजन करने बैठा, उसके साथ ही उसका पुत्र भी। पिता की थाली में पूरा लड्डू परसा गया और उस बच्चे की थाली में चौथाई हिस्सा। इस पर बच्चा जिद करने लगा और बोला, मैं पूरा लड्डू ही लूँगा। पिता ने बहुत समझाया किंतु उसने अपनी जिद नहीं छोड़ी। इतने में ही उसकी माँ आई और उसके चौथाई लड्डू को अंदर उठाकर ले गई। उसे गोल बनाकर परस दिया। अब बच्चा प्रसन्नता से भोजन करने लगा।

बच्चे की जिद पूर्णता के भाव की द्योतक है। पिता की तुलना में वह बाह्य आकार में छोटा हो सकता है, जैसे कि छोटे लड्डू से प्रसन्न होने से मालूम होता है, किंतु पूर्ण, पूरा लड्डू उसे चाहिए। अपूर्णता, अधूरापन उसकी स्वाभाविक स्थिति के, पूर्णता के विरुद्ध है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रत्येक चेतन में, प्रत्येक मनुष्य में पूर्ण भाव रखकर उसका उतना ही आदर-सम्मान करना, छोटे-बड़े की दृष्टि से भेद-भाव न रखना प्रसन्नता के साधक के लिए आवश्यक है।

प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए उदार बनिए। संकीर्णता, मनहूसपन से युक्त हृदय में प्रसन्नता प्रकट नहीं होती। सबके लिए हृदय खोलकर रखें, हृदय खोलकर मिलें। मनहूस वही होता है जो दूसरों के प्रति संकीर्णता व घृणा के विरोधी भाव रखता है। व्यवहार में, बातचीत में, रहन-सहन में, प्रत्येक बात में उदारता बरतें।

संसार में सभी का स्वागत मुस्कान के साथ करें। मुस्कान आपकी आंतरिक प्रसन्नता, सद्भावना, आत्मीयता का सिगनल है। दुश्मन के साथ मुस्कराकर बातचीत करने से दुश्मनी के भाव नष्ट हो जाते हैं। मुस्कान द्वारा दूषित भाव ग्रंथियाँ सहज ही नष्ट हो जाती हैं।

खिन्न नहीं, प्रफुल्ल रहा कीजिए

खिन्नता एक मानसिक संताप है जो मनुष्य को हर समय जलाया करती है। खिन्नता के कारण न कुछ अच्छा लगता है, न कोई काम करने को जी करता है। बात करने में अरुचि होती है, किसी के पास बैठने को जी नहीं चाहता। हर समय मन में एक संभार बना रहता है। एक रोष, क्षोभ और तनाव बना रहता है, जिससे सारा जीवन जड़ बनकर म्रियमाण सा बन जाता है।

खिन्न व्यक्ति का कहीं चित्त नहीं लगता। घर में बाल-बच्चों का कोलाहल अखरता है, बाहर दुनिया काटने को दौड़ती है। शून्य एकांत में श्मशान जैसी भयानकता अनुभव होती है। पढ़ने में जी नहीं लगता, घूमने-फिरने में थकान आती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खिन्न-मना व्यक्ति क्षण-क्षण पर घर से बाहर जाता है, बाहर से घर आता है। एक काम को छोड़कर दूसरा काम करना चाहता है, किंतु उसका मन नहीं लगता। उसे न कहीं विश्राम मिलता है और न चैन। सुख-शांति तो उसके लिए आकाश-कुसुम हो जाती है। यदि उसका मन लगता है तो केवल एक बात में कि दुनिया से लुक-छिपकर कहीं बैठ जाए और अपनी मानसिक जलन में तिल-तिल जलकर जीवन की आहुति देता रहे। न उसे कोई काम करना पड़े और न संसार का कोई व्यवहार निभाना पड़े।

खिन्न-मना व्यक्ति जब कोई काम करता है तो उसकी ऐसी बेगार टालता है कि काम बनने के बजाय बिगड़ जाता है। जब किसी से बात करता है, तब मानो या तो रोता है या लड़ता है। दूसरे का मधुर कथन कटु लगता है और स्वयं की मधुर बात को भी कड़ुआ करके व्यक्त करता है। खिन्नता एवं कटुता, अरुचिता की जननी है। ऐसे व्यक्ति का संपूर्ण जीवन ही नीरस और तिक्त बन जाता है। उसकी हर बात और हर काम या तो निर्जीवों जैसा होगा अथवा विक्षिप्तों जैसा। वह मानसिक विक्षेप के वशीभूत होकर किसी काम के योग्य नहीं रहता। यह है खिन्न-मना मनुष्य की दशा।

संसार में खिन्नता के एक नहीं, हजार कारण हो सकते हैं। कोई नुकसान हो सकता है, कोई कुछ कह सकता है, स्वाभिमान को ठेस लग सकती है, कोई परिजन बीमार हो सकता है, पैसे की कमी पड़ सकती है, कोई धोखा दे सकता है, चोरी कर सकता है, निराश कर सकता है। किसी से वाद-विवाद हो सकता है, निराशा हो सकती है, रोग या रंज हो सकता है। इस अनंत भीड़-भाड़ और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विविधताओं से भरी दुनिया में पग-पग पर खिन्नता के कारण सामने आ सकते हैं। कोई भी उनसे नहीं बच सकता।

संसार की विषम परिस्थितियाँ सबके लिए एक जैसी हैं। किसी को भी खिन्नता अथवा विषाद घेर सकता है। सभी लोगों को निराशा एवं प्रतिकूलताओं के बीच गुजरना पड़ता है। किंतु संसार के सारे आदमी खिन्न और व्यग्र नहीं दिखाई देते। लोग हँसते-बोलते और उत्साहपूर्वक काम करते हैं। यहाँ उन्हीं खिन्नता के कारणों के बीच में रहते हुए भी अनेक लोग प्रसन्न दिखाई देते हैं। यदि परिस्थिति के प्रभाव से संसार के सभी व्यक्ति खिन्न रहने लगें, तो क्या संसार एक पल को भी चल सकता है? प्रत्येक व्यक्ति अपना काम छोड़कर एकांत में बैठ जाए और खिन्नता की जलन का स्वाद लिया करे। व्यग्रता, खिन्नता, निराशा और अप्रियता आदि सबको साथ लेकर चलना ही पड़ता है। संसार के सारे काम करने ही पड़ते हैं। यदि खिन्नता आते ही सब विरक्त एवं वेदनापूर्ण स्थिति ग्रहण कर लें, तो दूसरे ही क्षण संसार की सारी गतिविधियाँ रुक जाएँ और यह चलता हुआ, आगे बढ़ता हुआ संसार जड़ होकर जहाँ का तहाँ रुक जाए और नष्ट हो जाए।

संसार कर्मभूमि है। यहाँ सबको कार्य करना ही पड़ता है। बिना काम किसी का गुजारा नहीं हो सकता। आदमी प्रसन्न है तब भी काम करना होगा और खिन्न है, तब भी कार्य से नहीं बच सकता। संसार का सारा विधान ही काम पर निर्भर रहता है। जो जितना कर्मठ है, वह उतना ही आगे बढ़ता है और जो जितना ही काम से मुँह चुराता है, वह उतना ही असफल रहा करता है। सफलता मिले अथवा असफलता, मनुष्य को काम तो करना ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पड़ेगा। जब तक श्वास चलती है तब तक काम करना पड़ता है। यदि शारीरिक काम बंद हो जाता है, तो मानसिक क्रिया-कलाप शुरू हो जाता है। क्या सफल और क्या असफल, क्या प्रसन्न और क्या अप्रसन्न, काम से कोई नहीं बच सकता, संसार के व्यवहार से विरत नहीं रह सकता।

कर्मों की सफलता ही जीवन की सफलता है। कर्मों का विस्तार ही अभ्युदय है और इनकी आधारशिला है—मानसिक प्रसन्नता। खिन्न मन रहकर कोई भी कार्य कुशलतापूर्वक नहीं किया जा सकता और जब तक कार्यकुशलता की सिद्धि नहीं होती, जीवन की सफलता की कोई आशा नहीं की जा सकती। अस्तु, जीवन में सफलता का श्रेय पाने के लिए मानसिक प्रसन्नता को अक्षुण्ण बनाए रखना बहुत आवश्यक है।

खिन्न व्यक्ति हर समय मन ही मन कुढ़ता, रोता और विषाद करता रहता है। उसका सारा उत्साह ठंढा पड़ जाता है। जीवन में कोई आशा नहीं रहती। चारों ओर अंधकार ही अंधकार दिखाई देता है।

संसार में सभी को कभी न कभी खिन्न होना पड़ता है, साथ ही उसे उससे छूटकर फिर अपनी स्थिति में आना पड़ता है। बिना खिन्नता से छूटे किसी का काम नहीं चल सकता। निरंतर खिन्नता की स्थिति में रहने वाला व्यक्ति एक प्रकार से निर्जीव ही हो जाता है। जिस जीवन में उल्लास, उत्साह और प्रसन्नता नहीं, वह मृत ही माना जाएगा। जीवन का अर्थ है—हँसी-खुशी से जीना और उत्साहपूर्वक काम करना।

जब खिन्नता से छूटे बिना मनुष्य का काम नहीं चल सकता, तो फिर उसे जीवन में एक क्षण को भी क्यों अवसर दिया जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य के मन में जितनी देर भी खिन्नता का विक्षेप रहता है, उतनी ही देर वह एक भीषण आग में जलता रहता है, जिससे जीवन का बहुत सा तत्त्व नष्ट हो जाता है। खिन्नता एक दिन में जितना जीवनतत्त्व जला देती है उतना जीवनतत्त्व एक महीने में भी प्राप्त होना कठिन है। जितना समय खिन्नता में व्यर्थ चला जाता है, उसका उपयोग एक अच्छा काम करने में किया जा सकता है।

किसी प्रतिकूलता अथवा अप्रियता के अभाव से खिन्न होकर बैठा रहना उससे छूटने का उपाय नहीं है। किसी बीती घटना की याद करना, उसके लिए रोना, कलपना या चिंता करना ठीक नहीं। भूतकाल की किसी अप्रिय घटना से त्रस्त होकर बैठ जाने और उसके चिंतन में समय खराब करने का अर्थ है कि आप अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए भी अंधकार का प्रबंध कर रहे हैं। जितनी देर आप बैठकर खिन्नता की क्रिया-प्रतिक्रियाओं को सहन करते और पीड़ित होते है, उतनी देर यदि प्रसन्नचित्त रहकर काम करें तो जीवन में अनेक सफल कदम आगे बढ़ सकते हैं।

जीवन को सुखी सफल बनाने का एक ही उपाय है कि आप एक क्षण को भी खिन्नता के वशीभूत न हों। अप्रिय परिस्थिति उत्पन्न होने पर भी प्रसन्नचित्त रहिए। संसार के प्रति अपना दृष्टिकोण इस प्रकार का बनाइए कि आपको प्रतिकूलताओं में भी सफलता और समुन्नति के पदचिह्न दिखाई दें। अपना मानसिक स्तर इतना ऊँचा उठाइए कि संसार की छोटी-बड़ी कोई भी प्रतिकूलता आपका मानसिक संतुलन अस्त-व्यस्त न कर सके। प्रतिकूलताओं में भी हँसिए, कठिनाइयों में मुस्कराइए और असफलता में सफलता की संभावना देखिए। विरोध को विरोध के रूप में न लेकर उसे प्रेरणा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के रूप में स्वीकार कीजिए। कटुता का उत्तर मधुरता में दीजिए। हानि-लाभ, सुख-दुःख, उत्कर्ष-अपकर्ष में तटस्थ रहिए। इनसे उस सीमा तक प्रभावित न होइए कि आपके लिए विषाद, निराशा, निरुत्साह अथवा व्यग्रता का कारण बन जाए। सामने आई हुई विविधताओं को संसार का सहज घटनाचक्र समझकर निर्विकार भाव से सहन कीजिए और तब देखिए कि बड़े से बड़ा कारण आने पर भी आप खिन्न नहीं होंगे।

खिन्नता हर तरह के शोक-संतापों की जड़ है। इसको आश्रय देते ही संपूर्ण जीवन दुःखों का भंडार बन जाएगा। खिन्नता कायर मन की अभिव्यक्ति है। वीर वह है जो संसार के सारे दुःख-द्वंद्वों को तटस्थ भाव से सहन करता हुआ सदा प्रसन्न रहता है।

जिंदगी हँस-हँसकर जिएँ

आत्मविकास, दीर्घ जीवन, आत्मविश्वास एवं आनंदप्राप्ति के लिए आवश्यक है कि हम पूर्ण रूप से मानसिक रोगों से मुक्त रहें। असंतोष तथा विक्षोभ जैसे मानसिक उद्वेग, मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति में बाधक होते हैं। प्रसन्नता, संतोष और अन्य सतोगुणी संपदाएँ मानसिक रूप में मनुष्य को स्वस्थ रखती हैं; इससे वह अपने लक्ष्य की ओर तत्परता से बढ़ता हुआ चला जाता है। लौकिक जीवन भी सुखमय बना रहता है और पारलौकिक ध्येय में भी अस्थिरता नहीं आती।

स्वर्ग यहीं पर है। यह सर्वत्र बिखरा पड़ा है। जहाँ भी उद्वेगरहित मस्तिष्क, शुद्ध हृदय और पवित्र अंतःकरण है वहाँ स्वर्ग है। यह समस्त संसार आनंद से ओत-प्रोत है, किंतु जो तृष्णा, असंतोष तथा आत्मग्लानि के बोझ से दबे जा रहे हैं, वे न इसे देख सकते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और न सुन सकते हैं। उसमें भाग लेकर अपने जीवन को उल्लासमय रखने के लिए यह स्वर्ग आपको प्रति क्षण पुकारता रहता है। कोई व्यक्ति न तो स्वर्ग से वंचित है और न हठात् किया जाता है। परेशानी केवल इतनी है कि अपने मानसिक संस्थान में क्षोभ और असंतोष की आग भड़काकर लोग स्वयं ही उससे संबंध विच्छेद किए रहते हैं। इस अवांछनीय स्थिति को दूर कीजिए। प्रसन्नता आपकी सहचरी है, उसे प्राप्त कीजिए। जिंदगी घुट-घुटकर नहीं, हँस-हँसकर मस्ती में बिताने के लिए है। जब हम अपने मस्तिष्क को उद्वेग-ग्रंथियों से मुक्त कर देंगे, सर्वत्र आनंद ही आनंद फैला दिखाई देगा।

जो मनुष्य संशयों से व्याकुल है, जो राग में फँसा है, जो केवल शारीरिक भोगों का ध्यान करता है, उसकी तृष्णा बढ़ती जाती है। ऐसा पुरुष अपनी जंजीरों को कसता जाता है, स्वयं ही दुःखों में जकड़ता जाता है। परंतु जिस मनुष्य ने अपने संशय दूर कर लिए हैं, जो सावधान है, जिसे थोड़ा मिले तो भी संतुष्ट रहे, वह भोगों के अशुभ गुणों पर विचार नहीं करता, उसका जीवन सुखी रहता है और पाप-बंधनों से मुक्त हो जाता है।

कई लोगों का जीवन ऐसा नहीं होता। धन की अतृप्त तृष्णा उन्हें सताती है, भोगों की ओर जी लगा रहता है, यश, पद और प्रतिष्ठा प्राप्त करने की हविस उन्हें हर घड़ी नाच नचाती रहती है। वे समझते हैं कि उनके क्लेश का कारण कोई और है, इसी से उनके मन में बराबर खीझ बनी रहती है। धन का न होना कोई अभिशाप नहीं है। वास्तव में दरिद्री वही है, जिसमें भारी तृष्णा है। जहाँ मन संतुष्ट रहता है, वहाँ धनवान और निर्धन होने की असमानता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का विचार भी नहीं होता। संतोष सबसे बड़ा धन है। धन की इच्छा होगी, तो दीनता उत्पन्न होगी ही। कमाई अधिक कर लो, तो उससे अभिमान जरूर बढ़ेगा, फिर यदि वह नष्ट हो गया, तो शोक बढ़ना स्वाभाविक है। इसलिए जो निस्पृह संतोषी है, वह सुख में रहता है।

आज जबकि राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, सामरिक, औद्योगिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्रों में सतर्कता व लगन से काम करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं, तब भी एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण पहलू उपेक्षित-सा पड़ा है। वह है, मनुष्य को स्वस्थ तथा हँसी-खुशी का जीवन जीना सिखाने की योजना। उद्योग और अर्थ-विकास के साथ-साथ मनोविकास होना भी आवश्यक है, अन्यथा बढ़े हुए साधनों से मनुष्य को कोई प्रसन्नता नहीं मिलेगी, वह क्षुब्ध और असंतुष्ट ही बना रहेगा। साधन जितने बढ़ेंगे आवश्यकताएँ भी उतनी ही बढ़ती रहेंगी और सारे मानसिक स्वास्थ्य को नष्ट कर डालेंगी। ऊपर से वह संपन्न दिखाई देगा किंतु आंतरिक जीवन में सरसता न होगी।

दैवी हृदय के मनुष्य शोक और यातना-विहीन होते है। मनुष्य का सच्चा जीवन प्रचुर और अमिश्रित सुख है, इस बात को समझकर वे कभी असंतुष्ट और विक्षुब्ध नहीं होते। हतोत्साह, निराशा, शोक, ये आनंदजन्य उद्वेग स्वार्थपरायणता तथा कामना के प्रतिबिंबित पक्ष हैं। इन दुर्गुणों का परित्याग कर दें, तो ये परिणाम स्वयं ही दूर हो जाते है। तब केवल दैवी आनंद शेष रह जाता है। जो कुछ अभी होने वाला है, उसके संबंध में चिंता न करें, जो कुछ हो चुका उसी को बार-बार याद करना भी भूल है। जो कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वर्तमान है उसे केवल आत्मविकास का साधन समझिए और उसी शस्त्र से जीवन संग्राम लड़िए। परिस्थितियों के हाथ अपना वैभव मत बेचिए।

संसार के सभी प्राणी यदि किसी बात में एक स्वर से सहमत है तो वह केवल दुःखों से छुटकारा पाने की चेष्टा करना ही है। क्या बूढ़े, क्या बालक, क्या मनुष्य, क्या पशु-पक्षी, दुःख के नाम से सभी घृणा करते हैं। प्रयत्न करने पर भी मनुष्य आपत्ति के चंगुल से बच नहीं पाता। इसका कारण भी निर्द्वंद्वता का अभाव होता है। दुःख निरा घृणास्पद ही है, पर उसका मूल कारण असंतोष की वृत्ति ही इस बात की जिम्मेदार है। अतः जीवन में प्रसन्नता को ओत-प्रोत होने देने के लिए हमारा जीवन कामना शून्य और संतुष्ट वृत्ति का होना चाहिए।

आप सुख के लिए निर्मित हुए है। आप स्वर्ग के पुत्र हो। शुद्धता, विवेक, प्रेम, प्रचुरता, आनंद तथा शांति, ये वस्तुएँ इस संसार की चिरंतन यथार्थताएँ हैं, वे मनुष्य के लिए दैवी वरदान है, पर मानसिक संतृष्णाओं में रहकर आप उनसे वंचित ही बने रहेंगे। आप विचार जगत को इस तरह स्वच्छ करने का प्रयत्न करें कि उसमें कोई धब्बा शेष न रह जाए। व्यावहारिक जगत में यह बात कुछ कठिन सी लगती है। आजीविका-व्यापार में ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं, जब मनुष्य के विचार शुद्ध नहीं रहते। उसमें कोई न कोई विकार आ टपकता है और सारी मनोभूमि को गंदी करके रख देता है। अंधकार घनीभूत हो रहा हो, तो प्रकाश की एक किरण उसे मिटा डालती है। मनोविकारों का अंधकार संतोष के दैवी प्रकाश से ही दूर होता है। संतोष अंतर्जगत में ऐसे वातावरण की सृष्टि करता है जिसमें सारे मनोविकार आकर धुल जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य संतुष्ट होकर जीना सीख जाए तो फिर उसके लिए संसार में कोई दुःख शेष न रहे। प्रत्येक वस्तु को सुख तथा आनंद में रूपांतरित कर लेना मुख्यतः दैवी मनुष्यों का ही कार्य तथा कर्त्तव्य है। प्रत्येक वस्तु को दरिद्रता तथा विपत्ति के रूप में देखना यह असंतोष का लक्षण है, जिसका अनुसरण सांसारिक वृत्ति के मनुष्य अचेतन होकर किया करते हैं। संतोष एक शक्ति है, जो प्रत्येक वस्तु को शक्ति तथा सौंदर्य के रूप में परिणत कर देती है। यह दरिद्रता में भी प्रचुरता, दुर्बलता में भी शक्ति, कुरूपता में भी सुडौलता, कटुता में भी मधुरता, अंधकार में भी प्रकाश उत्पन्न करता है तथा अपने प्रभाव से कमजोर परिस्थितियों में भी आनंदपूर्ण स्थिति पैदा कर लेता है।

कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, धर्म-अधर्म की परीक्षा के लिए शास्त्रकारों ने बताया है कि उसे 'आत्मतुष्टि' की कसौटी पर कसा जाए। अर्थात जिस कर्त्तव्य से हमारी आत्मा संतुष्ट हो, मन प्रसन्न रहे, वहीं धर्म है। जो कार्य करने में भय, लज्जा, शंका, ग्लानि जैसे मनोविकार उत्पन्न हों उन्हें करने के लिए आत्मा रोकती है। इसलिए आध्यात्मिक वृत्ति के मनुष्य अपनी आत्मा की प्रवृत्ति को देखते हैं। वे सोचते है कि जिस कार्य के करने से हमारी आत्मा को संतोष होगा वही हमारे लिए अभीष्ट है। उसी का वे संपादन भी करते हैं।

मत असंतुष्ट रहिए, मत खिन्न होइए

पूर्णता के लक्ष्य तक पहुँचने में अभी जितनी मंजिल बाकी है, उसे देखते हुए यह सोचना ठीक ही है कि हम अभी काफी पीछे हैं और तेजी से चलकर ही अपनी यात्रा पूरी कर सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस दृष्टि से अपनी प्रगति के प्रयत्नों को निरंतर अग्रगामी रखना ही उचित है। किंतु साथ ही यह सोचते और देखते रहना चाहिए कि हम कितने चल चुके, कितनी यात्रा पूरी कर चुके? यह सोचने और देखने से हमें प्रेरणा और स्फूर्ति प्राप्त होती है। आशा और उत्साह की भावनाएँ उमड़ने लगती है। इससे आगे बढ़ने में साहस की मात्रा बहुत बढ़ जाती है।

चौरासी लाख योनियों में पड़े हुए समस्त जीवों की अपेक्षा मनुष्य योनि की स्थिति बहुत आगे बढ़ी-चढ़ी है। जो सुविधाएँ अन्य किसी भी योनि में प्राप्त नहीं, वे मनुष्य को उपलब्ध हैं। भोजन, वस्त्र, मकान, वाणी, लेखनी, विद्या, बुद्धि, शासन, वाहन, व्यापार, विज्ञान, कृषि, शिल्प, चिकित्सा आदि अगणित ऐसे साधन हमें प्राप्त हैं, जो अन्य योनियों में सर्वथा दुर्लभ हैं। इस दृष्टि से यह मानना होगा कि मनुष्य की स्थिति साधन और सुविधा की दृष्टि से बहुत कुछ उत्तम है। हम स्वर्गलोक के देवताओं के बारे में उनकी विभूतियों का विचार करते हुए यही सोचते है कि वे हमारी अपेक्षा बहुत सुखी होंगे। इसलिए स्वर्गलोक प्राप्त करने की, देवयोनि प्राप्त करने की आकांक्षा लालसापूर्वक करते रहते हैं। इसी प्रकार सृष्टि के अन्य समस्त जीव-जंतु मनुष्य को भी धरती का देवता सोचते हों और उसकी स्थिति प्राप्त करने की अभिलाषा करते हों, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है।

अन्य जीव-जंतुओं से अपनी तुलना करते हुए हमें अपनी स्थिति पर संतोष और गर्व करने का अवसर प्राप्त है। जो मंजिल अभी अन्य योनि वाले जीवों को पार करने में बहुत देर लगेगी, वह हम पार कर चुके, यह क्या कुछ कम महत्त्व की सफलता है?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आगे साहस और उत्साहपूर्वक कदम बढ़ाने की प्रेरणा प्राप्त करने के लिए हमें अब तक प्राप्त हुई सफलता पर प्रसन्न होने के लिए पर्याप्त अवसर प्राप्त हैं। अपने आप को सर्वथा दीन-हीन ही समझते रहना, असफलता और कठिनाइयों की कल्पना करते रहना, सदा ही अच्छा नहीं होता। आकांक्षा को जगाने के लिए, आवश्यक बड़प्पन उत्पन्न करने की दृष्टि से लक्ष्य की दूरी को समझना और उस आधार पर तेजी से बढ़ने के लिए कदम उठाना, अधिक साहस प्रदर्शित करना समझ में आता है। उतनी मात्रा में उसकी आवश्यकता भी है पर सदा अपनी दीनता-हीनता की बात सोचते रहना भी हानिकारक है। इससे आत्मबल नष्ट होता है, निराशा आती है और उत्साह मंद पड़ जाता है। अपना पिछड़ापन ही जो लोग याद करते रहते हैं, उनके लिए प्रगति की शेष मंजिल पूरी करना कठिन हो जाता है।

आत्मविश्वास और साहस की आवश्यक मात्रा मन में बनाए रखने के लिए यह भी आवश्यक है कि अपनी प्रगति और सफलता का मूल्यांकन किया जाता रहे और उसका लेखा-जोखा रखा जाता रहे। जब कोई व्यक्ति हमारी सफलताओं का वर्णन करता है, गुणों की चर्चा करता है, तो स्वभावत: अपने भीतर की प्रेरणा शक्ति स्फूर्तिमान हो उठती है और अपने साहस प्रदर्शन का उत्साह आता है। उत्साह और विश्वास की मात्रा बहुत बढ़ जाती है। लंका को जाते हुए समुद्र लाँघने का अवसर आने पर हनुमान जी जब हिचकिचाने लगे, सफलता में संदेह करने लगे, तो जामवंत ने उनके बल-पौरुष की चर्चा करते हुए उन्हें उत्साह दिलाया। उस प्रेरणा को पाकर हनुमान का प्रसुप्त बल जाग उठा और वे आसानी से समुद्र पार कर सकने में सफल हो गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अच्छा तो यह है कि हर व्यक्ति अपने संबंधित लोगों के सद्गुणों और सफलताओं की चर्चा करने की आदत डाले और परस्पर प्रोत्साहन देते हुए एकदूसरे का मनोबल बढ़ाने में सहायता दे। वस्तुओं की सहायता देकर किसी की मंजिल जिस प्रकार आसान बनाई जा सकती है उसी प्रकार प्रोत्साहन देकर भी गतिशीलता में पर्याप्त सहयोग दिया जाना संभव है। इसका अर्थ यह नहीं कि किसी की झूठी खुशामद की जाए या जो गुण नहीं है, उसको भी बताने की चापलूसी करके किसी का मिथ्या अहंकार बढ़ाया जाए और न इसका यही प्रयोजन है कि किसी की खरी आलोचना न की जाए, उसके दोष-दुर्गुण न बताए जाएँ। यह गलत तरीका अपनाने पर मनुष्य का नाश ही होगा। प्रोत्साहन के लिए गुणों और सफलताओं की चर्चा करते हुए औचित्य और सचाई का ध्यान रखा जाए।

इस दुनिया में एक से एक अच्छे, श्रेष्ठ, सफल और सुयोग्य व्यक्ति पड़े हैं। उनके प्रति ईर्ष्या भाव रखने की कोई आवश्यकता नहीं और न यही उचित है कि उनके साथ तुलना करते हुए अपने को गया-गुजरा, पिछड़ा हुआ या दीन-हीन समझें। उन्नतिशील लोगों ने इस जन्म में जिस तत्परता से अपने-अपने सद्गुणों और पुण्यों को बढ़ाकर ही यह स्थिति प्राप्त की है, हम भी वैसा ही प्रयत्न क्यों न करें? ईर्ष्या से नहीं, अध्यवसाय से हम दूसरे उन्नतिशीलों की स्थिति तक ही नहीं, उससे भी ऊँची स्थिति तक पहुँच सकते हैं।

इस संसार में अनेकों मनुष्य ऐसे है जो हमारी अपेक्षा कहीं पिछड़े हुए हैं। नीति, सदाचार, कर्त्तव्य, उदारता और परमार्थ जैसे मानवोचित सद्गुणों में अधिकांश लोग पिछड़े पड़े हैं। उनकी तुलना में अपनी मनोभूमि निश्चय ही बहुत उत्कृष्ट प्रतीत होगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ठीक है अभी पूर्ण निर्दोषिता नहीं आई, भूतकाल में कई बुराइयाँ बनी और कुछ तो अभी मौजूद हैं, इतना होते हुए भी नृशंस लोगों से हमारी धारणाएँ अभी भी बहुत ऊँची सिद्ध हो सकती है। ऐसी दशा में एक सीमा तक प्रसन्नता की जा सकती है और आशा की जा सकती है कि पिछड़े हुए लोगों की तुलना में जब हम इतना आगे बढ़ चुके तो जो कमियाँ शेष रही हैं, उन्हें पूरा कर लेने में कोई विशेष अड़चन क्यों होगी?

स्वास्थ्य, शिक्षा, धन, घर, यश आदि की दृष्टि से हम दूसरों की तुलना में पिछड़े हो सकते हैं, उसमें मन को खिन्न होने देने की क्या बात है। लाखों-करोड़ों मनुष्य ऐसे हैं, जो हमारी अपेक्षा कहीं अधिक गई-गुजरी स्थिति में पड़े हुए अपना काम चला रहे हैं। अस्वस्थ, निर्धन, तिरस्कृत, बहिष्कृत, निराश्रित लोगों की कमी नहीं, उनकी तुलना में अपनी स्थिति अभी भी बहुत अच्छी है। जिसका विवाह ही नहीं हुआ है, उसकी अपेक्षा उसे कम ही खिन्न रहना चाहिए, जिसके संतान नहीं होती। जिसे व्यापार में घाटा हो गया उसकी स्थिति निर्धन की अपेक्षा फिर भी कहीं अच्छी है। अंधे, लूले, अपंग, कोढ़ी, पागल, पीड़ितों की अपेक्षा वह रोगी कम सौभाग्यशाली नहीं है जिसे अर्श, दाद, जुकाम, प्रमेह जैसे मामूली कष्ट वाले रोग घेरे रहते हैं। शत्रुओं से भारी वैमनस्य के कारण जिसे हर घड़ी प्राणघातक आक्रमण की आशंका बनी रहती है, उसकी अपेक्षा वह कम चिंतित होगा जिसे कर्जदार परेशान करते रहते हैं। इस प्रकार तुलनात्मक दृष्टि से विचार करने पर असंख्य संत्रस्त लोगों की अपेक्षा अपनी स्थिति कहीं अधिक संतोषजनक होती है। हमारी स्थिति को पाने के लिए भी लाखों-करोड़ों मनुष्य तरसते हैं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ऐसी स्थिति में केवल असंतुष्ट, चिंतित और खिन्न ही बने रहना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता।

इस संसार में पूर्ण कोई नहीं और न किसी को सर्वसुखसंपन्न एवं साधनों का स्वामी या कर्त्ता-धर्त्ता बनाया गया है। संपत्ति और विपत्ति का थोड़ा-थोड़ा अंश सबको दिया गया है। थोड़ी-थोड़ी सफलता और असफलता सबके हिस्से में आई है। भोजन में नमक और शक्कर दोनों ही परसे जाते हैं। धूप-छाँह की दुनिया में रात और दिन का, अंधकार और प्रकाश का जोड़ा अनादि काल से चला आता हैं। जिसके बहुत प्रशंसक होते हैं, उसके कुछ निंदक भी रहते ही है। केवल मित्र ही या केवल शत्रु ही जिसे मिलें, ऐसा कोई नहीं। प्रगति के लिए हम निरंतर सचेष्ट रहें, पर इसके लिए अपनी असफलताओं, अयोग्यताओं और अभाव का ही निरंतर चिंतन करते रहना अनावश्यक है। असंतोष एक छोटी मात्रा में ही उपयुक्त हो सकता है। आटे में नमक जितना ही ठीक है। पर जो हर घड़ी अपने दुर्भाग्य की ही बात सोचेगा वह धीरे-धीरे सचमुच ही वैसा बनने लगेगा। इसलिए जीव का एक अत्यंत आवश्यक महत्त्वपूर्ण पहलू यह भी है कि सद्गुणों और सफलता की दिशा में जो प्रगति हो सकी है, उस पर संतोष एवं हर्ष अनुभव करते हुए साहस बढ़ावें तथा प्रगति के लिए अधिक उत्साह एवं विश्वास के साथ अग्रसर हों।

अशांति के चार कारण और उनका निवारण

व्यक्ति हो अथवा राष्ट्र, तब तक उन्नत एवं समृद्ध नहीं हो सकता जब तक उसमें शांति का अभाव रहेगा। उन्नति की सारी संभावनाएँ शांतिपूर्ण वातावरण में ही निहित रहती हैं। संघर्ष, युद्ध एवं क्षोभ उन्नति के सबसे बड़े शत्रु हैं। इनसे अशांति का जन्म

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होता है और अशांति मानव की सृजन शक्ति को नष्ट कर डालती है। अशांति से क्षुब्ध चित्त मनुष्य का मन किसी काम में नहीं लगता और यदि वह हठपूर्वक लगाता भी है तो उसका काम ठीक से नहीं होता, जल्दी थक जाता है और काम को छोड़कर बैठा रहता है। अकर्मण्यता की स्थिति में उन्नति असंभव है।

बड़े से बड़े व्यक्ति और उन्नत से उन्नत राष्ट्र को लीजिए। जब तक उनका वातावरण शांतिपूर्ण बना रहता है, वे उन्नति के मार्ग पर चलते हुए दिन-दिन आगे बढ़ते रहते हैं। किंतु ज्यों ही उनमें आंतरिक क्षोभ अथवा कलह उत्पन्न होती है, उनकी उन्नति स्थिर नहीं रह पाती, उनका पतन हो जाता है, विनाश हो जाता है। संसार में न जाने कितने व्यक्ति एवं राष्ट्र इसी अशांति के कारण मिटे है और मिटते रहते हैं। उन्नति करने और उसको स्थिर बनाए रखने के लिए शांति की नितांत आवश्यकता है।

अशांति के अन्य अनेक कारण हो सकते हैं किंतु चार मूलभूत कारण है—(१) अभाव, (२) अहं, (३) असहयोग तथा (४) अज्ञान। इन कारणों की उपस्थिति में कोई भी व्यक्ति अथवा राष्ट्र शांतिपूर्ण स्थिति में नहीं रह सकता।

जहाँ **अभाव** है, आवश्यकताओं की अपूर्ति है, वहाँ शांति का हो सकना संभव नहीं। मनुष्य कितना भी संतोषी एवं सहनशील क्यों न हो, यदि उसे रोटी, कपड़े, निवास स्थान, आवश्यक वस्तुओं की कमी रहेगी, तो शांतिपूर्वक नहीं रह सकता। पेट की ज्वाला कब तक सहन की जा सकती है? शीत, घाम, वर्षा आदि के कष्टों की कब तक उपेक्षा की जा सकती है? फिर मनुष्य अकेला तो होता नहीं, उसका परिवार भी होता है, उसके बच्चे तथा आश्रित भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होते हैं। मनुष्य अपने पर कष्ट एक बार सहन भी कर सकता है, चुपचाप पड़ा रह सकता है, किंतु इतना कठोर कदापि नहीं हो सकता कि अपने आश्रितों तथा बच्चों को अभाव का कष्ट सहते देखकर भी विचलित न हो। वह अवश्य विचलित होगा, उसे चिंता होगी, जिसके परिणामस्वरूप उसकी शांति सुरक्षित नहीं रह सकती। वह अशांत, बेचैन तथा क्षुब्ध होगा ही।

अहं भी अशांति का बहुत बड़ा कारण है। मनुष्य के पास धन, जन, जमीन सब कुछ है, किसी प्रकार का अभाव नहीं है। रोटी, कपड़ा, घर, मकान सबकी सुविधा है, हर वस्तु आवश्यकता भर ही नहीं, अधिकतापूर्ण है; तब भी वह अहंकार की दुर्बलता के कारण अशांत रहेगा। अहं प्रधान व्यक्ति अपनी मनोनुकूलता में जरा-सा विघ्न पड़ते ही उत्तेजित हो उठता है। उसे क्रोध हो आता है जिससे उसका चित्त अशांति से भर जाता है। अहं का दोष मनुष्य को ईर्ष्यालु भी बना देता है। अपनी उन्नति के सामने अहंकारी व्यक्ति दूसरे की उन्नति सहन नहीं कर पाता। वह यथासंभव हर उचित-अनुचित कोशिश करता है कि वह तो दिन-दिन उन्नति करता रहे किंतु कोई दूसरा उन्नति न कर सके। समाज में सब उससे नीचे तथा निर्धन ही रहें। न कोई उसके बराबर हो सके और न आगे निकल सके। दूसरे की प्रगति में रोड़े अटकाना अहंकारी का विशेष दोष है। इस निम्न प्रवृत्ति के कारण ईर्ष्या, द्वेष, कलह एवं संघर्ष का जन्म होता है और तब उस अशांत स्थिति में समाज अथवा व्यक्ति का शांत रहना किस प्रकार संभव हो सकता है? अहंकारी व्यक्ति किसी को उन्नति करते देखेगा, तो उसे डाह होगी, उसके चित्त की शांति नष्ट हो जाएगी। किसी की प्रगति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रोकने में असफल होने पर आत्मग्लानि होगी जिससे शांति का रहना संभव नहीं। किसी के पथ में अवरोध बनने से अपवाद एवं लांछन का लक्ष्य बनना पड़ेगा, जिससे शांति का भंग होना स्वाभाविक है। अहंकारी व्यक्ति अपने स्वभाव-दोष के कारण कभी भी शांति नहीं पा सकता।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज की व्यवस्था परस्पर सहयोग पर ही निर्भर करती है। **असहयोग** की स्थिति में समाज की प्रगति अवरुद्ध हो जाया करती है। कोई भी सामाजिक प्राणी अकेले अपने बल पर जीवन की गाड़ी को नहीं खींच सकता। मालिक से यदि मजदूर सहयोग न करे, तो उसका कारोबार नहीं चल सकता। मालिक का असहयोग मजदूर के लिए रोटी, रोजी का अभाव ला सकता है। स्त्री-पुरुष के असहयोग में परिवार की सुख-शांति नष्ट हो सकती है। पिता, पुत्र का असहयोग विनाश का कारण बन सकता है। व्यापारी तथा किसान के बीच असहयोग उन दोनों की ही नहीं, समस्त समाज की हानि का हेतु होगा। जनता एवं सरकार का पारस्परिक असहयोग देश को गिरा देता है। असहयोग से उत्पन्न इन तथा इन जैसी असंख्य हानियों के बीच व्यक्ति अथवा समाज की शांति किस प्रकार अक्षुण्ण रह सकती है? मनुष्य आज किसी न किसी रूप में दूसरे मनुष्यों पर निर्भर है। एक अकेले वह अपना जीवन चला सकने में समर्थ नहीं है।

असहयोग, स्वार्थ एवं संघर्ष को भी जन्म देता है। स्वार्थी व्यक्ति या तो स्वभाव से असहयोगी होता है अथवा असहयोग को प्रश्रय देने से तदनुसार बन जाता है। सहयोग की स्थिति में जिस प्रेम, पारस्परिकता, सहानुभूति तथा सहकारिता की वृद्धि होती है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वह रुद्ध हो जाती है। इन आवश्यक मानवीय गुणों के अभाव में समाज में शांति का वातावरण संभव नहीं हो सकता। असहयोगी केवल स्वार्थी ही नहीं, कुटिल एवं कपटी भी होता है। वह दूसरे के काम तो नहीं ही आता, साथ ही किसी न किसी आडंबर द्वारा दूसरों से लाभ उठा लिया करता है। वह अपने असहयोग को इस ढंग से सहयोग का रूप दे दिया करता है कि सामान्य जन उसके दोष को नहीं जान पाते। किंतु जब उसका दोष समाज पर उद्घाटित हो जाता है, तब उसे समाज का असहयोग इस सीमा तक सहन करना पड़ता है कि उसका पूरा जीवन ही अशांत हो जाता है। समाज में असहयोग की प्रवृत्तियाँ अशांति का बहुत बड़ा कारण हैं।

अज्ञान तो अशांति की जीता-जागता रूप ही है। जिस प्रकार अंधकार में मनुष्य भटकता हुआ बेचैन रहा करता है, उसी प्रकार अज्ञान की दशा में भी मनुष्य अशांत रहा करता है। अज्ञानी पग-पग पर ठगा जाता है। अज्ञता के कारण वह किसी काम को सफलतापूर्वक नहीं कर पाता। मूढ़ मनुष्य का कहीं भी आदर नहीं होता। अज्ञानी व्यक्ति जीवन व्यवस्था से शून्य रहकर अपने लिए कष्टों के बीज बोता रहता है। मूढ़ मनुष्य को सत्य-असत्य, हित-अनहित का ज्ञान नहीं होता। विवेकहीनता की दशा में उसके हर व्यवहार में असत्य एवं कृत्रिमता का समावेश हो जाता है। आडंबर, प्रदर्शन एवं कृत्रिमता अज्ञान का ही अभिशाप है। अव्यावहारिक होने से अज्ञानी व्यक्ति समाज में यथायोग्य शिष्टाचार पालन करने में भी भूल करता रहता है जिससे उसे तिरस्कार का भाजन बनना पड़ता है, जो उसमें मानसिक क्षोभ को जन्म देता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अज्ञान के कारण, जीवन का लक्ष्य न जानने के कारण, मनुष्य अधिकतर रास्ते से भटककर कंटकाकीर्ण पगडंडियों में उलझ जाता है। जीवन की सारी हानियाँ, असफलताएँ, निराशाएँ अज्ञान के ही फल कहे गए हैं। अज्ञान के कारण ही मनुष्य असत्य में सत्य और सत्य में असत्य की भ्रांति पा जाता है। अनिश्चय के कारण अज्ञानी व्यक्ति भय, संदेह, अविश्वास एवं आशंका से पग-पग पर आक्रांत एवं अशांत रहा करता है। रूढ़िवाद, मूढ़वाद एवं अंधविश्वास अज्ञान की ही तो देन है। अज्ञान के कारण आत्म-अविश्वासी होकर मनुष्य पराधीन तथा परावलंबी बना रहता है, जिससे उसे परानुग्रहपूर्ण जीवन बिताने की यातना सहन करनी पड़ती है। पराधीनता की स्थिति में भी कोई शांत चित्त रह सकता है, यह बात सर्वथा असंभव है। अज्ञानी व्यक्ति समाज में दुर्वृत्तियों तथा दुराचार को जन्म देता है; जिसके कारण वह दूसरों की शांति में बाधक बनकर अपनी शांति भी नष्ट कर लिया करता है।

शांतिपूर्ण स्थिति के लिए मनुष्य को पुरुषार्थी, सुशील, सहयोगी तथा विवेकवान बनना ही होगा। मनुष्य अपने सामाजिक व्यक्तित्व को पहचाने। समाज की उन्नति में ही अपनी उन्नति समझे। अपने सामाजिक स्वरूप को पहचान लेने पर मनुष्य कोई भी ऐसा काम करने में संकोच करता है, जो किसी प्रकार भी सार्वजनिक जीवन के लिए अहितकर हो सकता है। जब मनुष्य व्यष्टि को समष्टि में विलीन कर देता है, तो उसकी स्वार्थ एवं संकीर्णता की दुःखदायी वृत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं। समाज का हित आगे रखकर सोचने और व्यवहार करने वालों को पूरे समाज का सहयोग अनायास ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिलने लगता है, जो उनकी उन्नति एवं विकास में सर्वथा सहायक होता है। समाज द्वारा हाथोंहाथ लिए गए व्यक्ति का जीवन कितना सुख-शांतिपूर्ण हो सकता है, यह किसी भी सच्चे समाजसेवक के निकट संपर्क में आकर जाना जा सकता है।

सामाजिक सहयोग एवं सहकारिता सुख-शांतिपूर्ण जीवन की गारंटी है। मनुष्यों का पारस्परिक सहयोग तथा सहकारिता समाज में अभाव को प्रवेश नहीं करने देती और वर्तमान अभाव को भगा देती है। सहयोग एवं सहकारिता की स्थिति में हर मनुष्य दो हाथ से हजार हाथ वाला हो जाता है। अपने परिश्रम एवं पुरुषार्थ को समाज की सेवा में समर्पित कर देने वाले निस्स्वार्थी व्यक्तियों के लिए संपूर्ण समाज का परिश्रम एवं पुरुषार्थ उनका अपना हो जाता है। सुख-दु:ख को मिल-बाँटकर भोग करने वालों के बीच अशांति अथवा असंतोष का कोई अवसर ही नहीं रहता। प्रेम, सहानुभूति, संवेदना एवं पारस्परिकता की मानवीय भावनाएँ, सहयोग एवं सहकारिता से ही संभव होती हैं।

किंतु मनुष्य को इन गुणों की उपलब्धि भी तब ही हो सकती है, जब वह अज्ञान के निविड़ अंधकार से निकलकर जीवन के सच्चे प्रकाश में आए। अज्ञानी व्यक्ति प्रेम, सहानुभूति, सहयोग तथा निस्स्वार्थ भावना के मानवीय गुणों की महत्ता से सर्वथा अनभिज्ञ रहता है। दुराग्रह एवं दुर्व्यवहार अज्ञान के कष्टकारक दोष हैं। सत्य-असत्य एवं उचित-अनुचित का निर्णय कर सकने वाला ज्ञान प्राप्त करने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग हर प्रकार से सहायक हो सकते हैं। जिन्हें संयोगवश स्वाध्याय की सुविधा प्राप्त नहीं है उन्हें सत्संग तथा प्रामाणिक व्यक्तियों के कथनों, निर्देशों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तथा उपदेशों से निश्चय करके अपने चरित्र का विकास करना चाहिए। सत्य के समर्थन में अपनी मान्यताओं, परंपराओं, धारणाओं, रूढ़ियों, आग्रहों तथा अंधविश्वासों का त्याग कर सकने का साहस भी ज्ञान ही है। सत्य को यथावत स्वीकार कर लेने और उसको अपने व्यवहार में लाने वाले व्यक्ति ज्ञानी ही कहे जाएँगे, फिर चाहे वे निरक्षर ही क्यों न हों!

सामाजिक चेतना में ओत-प्रोत पुरुषार्थी व्यक्ति के जीवन में अभाव अथवा अशांति की संभावना अधिक नहीं रहती। अशांति, असंतोष एवं अभाव तो आलसी, स्वार्थी, असहयोगी तथा असामाजिक व्यक्ति का दाय-भाग है, जो अपनी अज्ञानतापूर्ण प्रवृत्तियों के कारण पाएगा और भोगेगा। वर्तमान समय में यह त्रुटि हमारे जन-जीवन में बहुत अधिक घर कर गई है। ऐसे व्यक्तियों की संख्या उँगलियो पर गिनने लायक है जो व्यक्तिगत जीवन में सामाजिक सहयोग के महत्त्व को समझते हैं और अपने कार्यों में सार्वजनिक हित का दृष्टिकोण रखते हैं। यदि इस त्रुटि का मार्जन किया जा सके, तो हमारी स्थिति में अनेक शुभ परिवर्तन हो सकते हैं।

यदि आपके जीवन में अशांति है, असंतोष है, तो अपनी परीक्षा कीजिए; अपनी प्रवृत्तियों को परखिए और उन कारणों को खोज-खोजकर निकालते रहिए जो उसके आधार बने हुए हैं और तब देखिए कि आपकी जीवनधारा सुख एवं शांति के सुंदर कूलों के बीच बहती चली जाती है या नहीं।

❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ० प्र०)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षों में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org